(1)

राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 6) षष्ठम् विधान सभा के षष्ठम् सत्र का 15वां दिवस (संख्या 9

सोमवार

दिनांक 8 अक्टूबर, 1979

विधान सभा की बैठक म. पू. 11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री गोपालसिंह, अध्यक्ष पदासीन)

शोकाभिव्यक्ति एवं श्रद्धांजलि

स्वर्गीय लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण को श्रद्धांजलि

श्री भैरोंसिंह शेखावत (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, आज प्रातःकाल बाबू जय प्रकाश नारायण का स्वर्गवास हो गया। इस सूचना से सारे देश में शोक व्याप्त हो रहा है। बाबू जय प्रकाश नारायणजी ने देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को एक दिशा दी है। वह लोकतन्त्र के कट्टर हामी थे। वे इसके प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। लोकतन्त्र पद्धति पर जब भी कोई किसी भी ओर से विपत्ति आई या देश पर किसी प्रकार का कोई संकट आया, बाबू जयप्रकाश जी ने उस समय देश का मार्गदर्शन करके लोकतंत्र की पुनर्स्थापना करने में और देश के संकट का निवारण करने में देश का मार्गदर्शन किया। जिस व्यक्ति ने आरम्भ से लेकर अन्त तक, चाहे वह विदेशी साम्राज्य हो, चाहे सामाजिक बुराइयां हों, चाहे राजनैतिक दोष हों, इन सब से संघर्ष किया उस व्यक्ति ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में मौत से भी बड़ा भारी संघर्ष किया। इस सदन को जानकारी होगी कि आज से कुछ माह पूर्व उनकी इसी प्रकार की स्थिति बन गई थी। बम्बई के जसलोक अस्पताल में वे उपचार हेतु ले जाये गये थे। वहां उनका उपचार हो रहा था। उनको रुग्ण शैय्या पर मैंने और मेरे अनेक साथियों ने वहां देखा। देखने पर ऐसा लगता था कि इस प्रकार का एक बहादुर व्यक्ति जैसे जीवन में अनेक बातों से संघर्ष करता हुआ जीवन की इस घड़ी तक पहुंचा है, वह उस अन्तिम घड़ी में मौत से भी संघर्ष कर रहा है। यह इस प्रकार का संघर्ष था, जिन लोगों ने उनको अपनी रुग्ण शय्या पर सोया हुआ देखा है, वे उसका अनुमान लगा सकते हैं। जो आदमी बोल नहीं सकता, अपनी मर्जी से हाथ पांव हिला नहीं सकता, वह व्यक्ति अपनी विल पावर से मौत का मुकाबला कर रहा था। मौत और जीवन का संघर्ष यदि प्रत्यक्ष में उदाहरण के रूप में इस देश के सामने किसी व्यक्ति ने प्रस्तुत किया है तो बाबू जय प्रकाश नारायण ने किया है। मुझे याद है, अध्यक्ष महोदय, जिस समय उनका यह संघर्ष चल रहा था, उनके निजी सचिव ने एक बार बाहर आकर कहा कि केवल बाबू जय प्रकाश नारायण की विल पावर ही तगड़ी नहीं है, मैं अपनी विल पावर से आप सब लोगों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि हम एक बार यहां से निश्चित रूप से पटना जाएंगे। बाबू जय प्रकाश नारायण स्वस्थ हो जाएंगे। उस समय उनके

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

निजी सचिव की बात पर भरोसा नहीं आता था लेकिन उन्होंने एक बार फिर कहा जैसे बाबू जय प्रकाश नारायण की विल पावर स्ट्रांग है, उसी प्रकार की विल पावर मेरी है। उसके आधार पर मैं यह सब कुछ कह रहा हूं। धीरे-धीरे उनके स्वास्थ्य में सुधार होने लगा तो इस बात का विश्वास हुआ। जब पूर्णतया स्वस्थ हो गये उस समय भी मैं उन से मिला। मैं ऐसा समझता हूं कि डायलिसिस की थकान के अलावा उनके चेहरे पर, शरीर पर, उनकी बातचीत में, उनकी विचारधारा में, उनके कार्यक्रम में इस प्रकार का कोई संकेत नहीं मिलता था कि इस व्यक्ति पर इतनी लम्बी बीमारी के कारण कोई बहुत बड़ा बोझा आया हो। जैसे सब चीजों से बिल्कुल स्वतन्त्र होकर वह देश की समस्या का चिन्तन करते हों, उसी चिन्तन में उन्होंने दो-तीन बार मुझसे अपने स्वास्थ्य के बारे में, राजनैतिक स्थितियों के बारे में पूछा, किस प्रकार का कार्यक्रम चल रहा है, यह पूछा और अन्त में कहने लगे अन्त्योदय के माध्यम से जितनी गरीबों की तुम सेवा कर सकोगे वही सत्ता का सबसे ज्यादा बड़ा फल होगा। यह प्राप्त फल अपने हाथ से निकल जाए, इस प्रकार की कोई छूट आपको नहीं देनी ह, इसमें कोई ढिलाई नहीं होनी चाहिए। इससे लगता था उस आदमी का एक मिशन था, वह मिशन केवल राजनैतिक व्यवस्था में सुधार करने का नहीं था, लेकिन समाज के जो पिछड़े हुए वर्ग हैं, गरीब वर्ग हैं, गरीब की घुटन क्या हो सकती है, पिछड़े वर्ग की समस्या क्या हो सकती है, इन सबका बाबू जय प्रकाश नारायण पर पूरा बोझ था। उसे पूरा करने में वे अपने आप में दुःखी थे। इसका समाधान किस प्रकार किया जाए, समाधान कौन करे, किस गति से उसका समाधान हो, इसकी हमेशा उनको चिन्ता रहती थी। मै ऐसा समझता हूं, अध्यक्ष महोदय, जहां समाज में गरीबी फैली हुई है वहां देश के प्रमुख व्यक्ति गरीबों की ओर थोड़ा ध्यान देते तो बहुत बड़ी समस्या का समाधान इस प्रकार की व्यवस्था से कर सकते हैं, जिस व्यवस्था में किसी बड़े उपद्रव की आवश्यकता महसूस न हो। बाबू जय-प्रकाश नारायण हिन्दुस्तान की राजनीति में, अर्थ नीति में, एक इस प्रकार का परिवर्तन करना चाहते थे कि शांति के माध्यम से हम गरीबों तक पहुंच सकें, गरीबों की समस्या का समाधान कर सकें, गरीब और अमीर के अन्तर को हम किसी प्रकार कम कर सकें। आपने देखा होगा कि जिस समय राजनीतिक आधार पर देश में लोकतन्त्र पर संकट आया, बाबू जय प्रकाश नारायण ने कोई कसर नहीं छोड़ी। उनकी बड़ी भारी आलोचना हुई। उस आलोचना की उन्होंने कोई चिन्ता नहीं की और एक दिन उस आलोचना की चिंता न करने के कारण धीरे-धीरे देश में इस प्रकार की स्थिति बना दी कि लोग यह महसूस करने लगे कि हिन्दुस्तान में से लोकतंत्र नहीं जा सकता है। हिन्दुस्तान में लोकतंत्र की जड़ें बहुत गहरी हैं, उनको कोई उखाड़ नहीं सकता। बाबू जयप्रकाश नारायण जैसे स्तम्भ जब तक बैठे हैं देश को प्रेरणा देने, देश का मार्ग दर्शन करने के लिए तब तक इस लोकतंत्र पर आन्तरिक और बाह्य रूप से किसी प्रकार का संकट नहीं आ सकता है। उन्होंने अपने आपको लोकतंत्र के प्रतीक के रूप में हमारे देश में रखा। वह गरीबों के हितचिन्तक थे, इस रूप में उन्होंने अपने आपको रखा वे निस्वार्थ भाव से काम करने वाले थे। आज

Page No 3

(3)

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

के इस युग में कोई बिना स्वार्थ के सेवा के लिए तनिक मात्र ही तैयार न हो ऐसे समय में बाबू जय प्रकाश नारायण अपने जीवन के आरम्भ से लेकर जीवन के अन्त तक इस बात के प्रतीक हैं कि समाज की सेवा, देश की सेवा निस्वार्थ भाव से भी की जा सकती है और निस्वार्थ भाव से जो देश की सेवा करते हैं उसकी कदर इस देश के अन्दर होती है। बाबू जयप्रकाश नारायण चाहते तो प्रधान मन्त्री बन सकते थे, राष्ट्रपति बन सकते थे, और कोई पद ले सकते थे लेकिन उन्होंने किसी पद की किसी प्रकार की चिंता नहीं की। बिना पद के लोभ-लालच के या अन्य किसी प्रकार के लोभ-लालच के वे निरन्तर देश की सेवा करते रहे। उन्होंने देश की सेवा कर देश के सामने एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया कि जो निस्वार्थ भाव से देश की सेवा करेगा, जनता उसका साधुवाद करेगी, देश उसकी प्रशंसा ही नहीं करेगा बल्कि देश उसके मार्ग पर चलने को तैयार होगा। इस रूप में बाबू जयप्रकाश नारायण ने इस बात का प्रेरणादायक मंत्र देकर देश में एक इतिहास का निर्माण किया है। मैं ज्यादा तो नहीं कहना चाहता हूं, आज वे हमारे बीच में से उठ कर चले गये हैं, आप भी जानते होंगे और मेरा भी यह विश्वास है कि आज उनकी देश में सबसे ज्यादा आवश्यकता थी, अपने देश में जिस प्रकार की राजनैतिक उथल-पुथल हो रही है, राजनीति के प्रति जिस प्रकार की भावनाएं आज देश में, समाज में पनप रही हैं, उस समय देश के अन्दर एक ऐसे बड़े नेता की बहुत बड़ी आवश्यकता थी। दुर्भाग्य से वे हमारे बीच में से चले गये, उनकी कमी पूरी हो सकेगी, इसकी सम्भावना मुझे नजर नहीं आती है। निकट भविष्य में पूरी होने का प्रश्न भी नहीं। भविष्य में कल का मैं कह नहीं सकता लेकिन आज की जरूरत के अनुसार जिस व्यक्ति के नेतृत्व की बहुत बड़ी आवश्यकता थी वह नेतृत्व हमारे बीच से उठ गया। हमें इस बात का बड़ा दुःख है। इस अवसर पर उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे यह प्रार्थना करता हूं। सारा देश इस दुःख के कारण से शोकाकुल है देश के सारे नागरिक मिल कर हम संकट के इस शोक को बर्दाश्त कर सकें, मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं, इस प्रकार की शक्ति प्रदान करें।

अध्यक्ष महोदय, मैं इसी संदर्भ में एक प्रस्ताव रखना चाहूंगा "यह सदन लोक नायक बाबू जयप्रकाश नारायण के निधन पर अपना गहरा शोक और संवेदना व्यक्त करता है।"

पुण्यश्लोक बाबू जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व एवं कृतित्व से हम सब परिचित हैं। जिस समय देश में आपातकालीन स्थिति लागू की गई थी, उस समय उसका विरोध करने वालों में वे सर्वप्रथम थे। इसी आपातकाल के दौरान उन्होंने गहन यातनाएं सहीं किन्तु उसके विरोध में अपने मुखर स्वर को कभी भी शांत नहीं होने दिया। वस्तुतः यह कहा जा सकता है कि उनका नाम महात्मा गांधी के बाद वरिष्ठतम महापुरुष की श्रेणी में गिना जावेगा।

देश में व्याप्त अराजकता एवं भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फैंकने और लोकतांत्रिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिये उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उनकी मान्यता थी कि लोकतन्त्र तभी जीवित रह

(श्री भैरोंसिंह शेखावत)

सकता है, जब कि उसके नेता और कर्णधार ही नहीं, बल्कि प्रत्येक निर्वाचित सदस्य अपना आचरण शुद्ध रखे और नैतिकता के उच्च मानदण्ड स्थापित करें।

अन्तिम घड़ी तक वे इस बात के लिये प्रयत्नशील रहे कि देश के राजनैतिक जीवन में नैतिक मूल्यों का विघटन न हो और देश को एक स्वच्छ एवं स्थाई प्रशासन प्राप्त हो। ऐसे महापुरुष के चले जाने से देश ने न केवल एक बड़ा ज्योतिपुंज खो दिया है, बल्कि हम सब उस से मिलने वाले निरन्तर मार्गदर्शन से भी वंचित हो गये हैं। उनके निधन से ऐसी रिक्तता उत्पन्न हो गई है, जिसका भरना कठिन ही नहीं, असम्भव है।

इस अवसर पर यह सदन उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करता है और उनके शोक-संतप्त परिवार को इस असहनीय पीड़ा को सहने की शक्ति प्राप्त हो, ऐसी कामना करता है।

श्री लक्ष्मणसिंह (नेता प्रतिपक्ष) : अध्यक्ष महोदय, बाबू जयप्रकाश नारायण के निधन से सारे देश में शोक का सन्नाटा छा गया। वह एक महान भारतीय नागरिक थे और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त नेता थे। जब देश आजाद हुआ उसके पहले भारत छोड़ो आन्दोलन में जो तीन युवक नेता आगे आये उनमें वे एक थे। बाबू सुभाष चन्द्र बोस, पं. जवाहरलाल नेहरू और बाबू जय प्रकाश नारायण। बाबू सुभाष चन्द्र बोस ने इस देश की आजादी के लिये सशस्त्र क्रान्ति, देश के बाहर रह कर जद्दो-जहद की। पं. जवाहरलाल नेहरू को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के पश्चात् उनका उत्तराधिकारी कहा जाय, उनका जानिसार कहा जाय, जिनके द्वारा इस देश में महान जनतंत्रीय परम्परा की स्थापना हुई। वह चाहते तो कुछ भी हो सकते थे लेकिन उन्होंने जनतांत्रिक पद्धति से ऐसी परम्परायें इस देश में स्थापित कीं जो ऐतिहासिक और चिरस्मरणीय रहेंगी। इन दोनों महान नेताओं के मुकाबले में बाबू जय प्रकाश नारायण किसी हालत में कम नहीं थे। वह सर्वोदयी नेता थे। वह एकदम निस्वार्थ थे और कोई पद लोलुपता उनको छूकर नहीं गई। उन्होंने अहिंसा और सत्य से, जब देश के ऊपर संकटापन्न स्थिति के बादल छा गये थे, एक अद्वितीय उत्तरदायित्व निभा कर देश को प्रेरणा दी, आपातकाल में जयप्रकाश जी का कृतित्व हम सब को मालूम है। जब देश अन्धकार में से गुजर रहा था तो उन्होंने अपने अद्वितीय प्रकाश से देश को प्रेरणा दी। यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है। उन्होंने डाकुओं को बिना हिंसा और सत्य के प्रभाव से इतना प्रभावित किया कि डाकुओं को सच्चे नागरिक के रूप में परिणित कर दिया। उन्होंने जो बीमारी से संघर्ष किया वह भी चिरस्मरणीय रहेगा।

इस सदन में उनकी मृत्यु की घोषणा एक बार हो चुकी थी। जीवन और मरण के साथ संघर्ष करते कई महीने उन्होंने गुजारे। यह विधि की विडम्बना है कि उनको कुछ महीने और जीना पड़ा और यह देखना पड़ा कि एक महान दल जिसको उन्होंने जन्म दिया था, भी बिखर गया। उन्होंने जिस प्रकार देश की सेवा कई वर्षों तक की वह इतिहास में स्वर्णिम पन्नों में लिखा जायेगा, यह निर्विवाद बात है। ऐसे महान व्यक्ति, ऐसे महान ख्याति प्राप्त, अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जन नेता, ऐसे

(श्री लक्ष्मणसिंह) गणतंत्र के प्रेरक बाबू जय प्रकाश नारायण के प्रति मैं अपने दल की ओर से नतमस्तक होकर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और परम वल परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत महान आत्मा को शान्ति प्रदान करे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का सादर समर्थन करता हूं।

श्री परसराम मदेरणा (भोपालगढ़) : बाबू जय प्रकाश नारायण जी आज प्रातः हमेशा के लिये इस दुनिया से चिर निद्रा में सो गये। जय प्रकाश जी के जीवन संघर्ष की लम्बी कहानी है। एक साधारण परिवार में पैदा होकर अमरिका में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिये उन्होंने भारी संघर्ष किया और मेहनत मजदूरी करके उन्होंने शिक्षा प्राप्त की। यह उनका शिक्षा के लिये किया गया संघर्ष आने वाली पीढ़ी के लिये अनुकरणीय उदाहरण रहेगा। अमेरिका से लौटने के बाद वे समाजवादी विचारधारा के प्रेरक बन गये थे। देश के स्वतंत्रता आन्दोलन, चाहे वह अवज्ञा आन्दोलन था चाहे अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन था, देश की आजादी के आन्दोलन में वे उच्च कोटि के महान सेनानी रहे। वह भारत छोड़ो आन्दोलन के समय हजारी बाग जेल से भागे और कई रात और दिन तक भारी यातनाओं के बाद, जब कि उनके पैर लहूलुहान हो गये, इस देश के राष्ट्रीय आन्दोलन को उन्होंने एक शक्ति ही प्रदान नहीं की बल्कि उसको सशक्त बनाया। इसी दौरान जब वे पकड़े गये, लाहौर की तरफ जाते हुए हरियाणा के आस पास कहीं, तो उनको लाहौर जेल में अनेक यातनायें दी गईं। उनके साथ में उस वक्त की ब्रितानी सरकार ने बड़ा दुर्व्यवहार किया। उन्हें पत्थर की शिलाओं पर सुलाया। अंग्रेज उनको बार-बार टार्चर कर रहा था लेकिन देश में आन्दोलन तीव्र गति पकड़ रहा था। उनके शरीर पर भार इस देश के आन्दोलन के नजदीकी ब्रिटिश साम्राज्य के लिये करीब करीब एक-एक कील का काम कर रहा था। देश की आजादी के बाद यह निर्विवाद सत्य है कि उन्होंने कांग्रेस के अन्दर भी अपना एक मंच बनाया था। उसके बाद समाजवादी पार्टी की उन्होंने स्थापना की, अपने समाजवादी विचारों से उन्होंने देश के नव निर्माण में अपने व्यक्तित्व की छाप छोड़ी है, उसके बाद जब इस देश में भूदान और ग्राम दान का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो आचार्य विनोवा भावे के नेतृत्व में उन्होंने देश को एक नई विचारधारा दी, उसके क्रियान्वयन के अन्दर वह निष्ठा के साथ लग गये, उन्होंने अपने मौलिक विचारों से, चाहे वह सर्वोदयी विचारधारा हो या समाजवादी हो, अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से राष्ट्रीय-स्तर के अनेक व्यक्तियों को प्रभावित किया, अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर भी वह अपने स्वतन्त्र विचार रखते थे, कई मर्तबा उन्होंने अनहोने अनहोने अन्तर्राष्ट्रीय उलझे हुए प्रश्नों पर अपने विचारों से संसार के अन्दर अपना प्रभाव डाला और अपने विचारों को निर्भिकता के साथ रखा।

मुझे अध्यक्ष महोदय, याद है, 1961 में समग्र सेवा संघ के तत्वावधान में राजनैतिक पार्टियों का एक सम्मेलन बुलाया गया था कि राजनैतिक पार्टियों की क्या आचार संहिता रखी जानी चाहिए, उन दिनों मैं भी उस सम्मेलन में सम्मिलित हुआ था, उस वक्त उन्होंने जो विचार व्यक्त किये, उस सम्मेलन में सम्मिलित लोग मुझे याद नहीं, स्वास्थ्य मंत्री जी उस

(श्री परसराम मदेरणा)
वक्त उपस्थित थे, तीन दिन के विचारों से मुझे ऐसा मालूम हुआ कि देश की लोकतांत्रिक संसदीय प्रणाली के अन्दर वह एक ऐसी संहिता बनाना चाहते थे ताकि राजनैतिक पार्टियां अपने आचरण और अपने एक्शन से इस देश में लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूत करें, उन्होंने पिछले चार पांच वर्षों में गुजरात आन्दोलन, बिहार आन्दोलन, समग्र क्रांति को नेतृत्व दिया, उसके साथ-साथ युवक वाहिनी के संगठन का निर्माण भी किया। अध्यक्ष महोदय, इन आन्दोलनों से उन्होंने देश की राजनीति को प्रभावित किया, प्रभावित ही नहीं अपनी आस्थाओं, मान्यताओं और अपनी विचारधारा को प्रतिपादित भी किया, उसे वे प्रभावित करते रहे, यह भी निर्विवाद सत्य है, वह एक अदम्य मनोबल के व्यक्ति थे, यही कारण था कि 22 मार्च को हमें दुखद यहां पर सूचना मिली मिली थी लेकिन उसके बाद भी मृत्यु से संघर्ष करते हुए वह कई महीनों तक अपनी बीमारी से जूझते रहे।

अध्यक्ष महोदय, मैं अंत में भारत के महान् सुपुत्र, राष्ट्र भक्त समाजवादी विचारक, और साथ ही साथ अपने मत के धनी एक महान् आत्मा को अपने दल की ओर से और अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे। उनके परिवार के प्रति मैं संवेदना प्रेषित करता हूं।

श्री मथुरादास माथुर (डीडवाना) : अध्यक्ष महोदय, बाबू जयप्रकाश नारायण के देहावसान का समाचार जैसे ही लोगों को मिला, सभी देशवासियों को उससे दुःख हुआ है। बाबू जयप्रकाश नारायण भारत माता के उन सपूतों में से हैं जो इतिहास में हमेशा अमर रहे हैं। उनकी जिन्दगी वह गज़ल है, जो सदियों तक लोग गुनगुनाते रहेंगे।

सबसे पहले 1926 में मैं बाबू जयप्रकाश नारायण से मिला तब वह एक कांग्रेसी सोशलिस्ट थे। उनकी पर्सनेलिटी निखरे रूप में 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में सामने आई। वह अपने विचारों के बड़े पक्के थे। इसी कारण वह तब से बराबर मुख्तलिफ पार्टियां बनाते और बदलते रहे। उनकी जिन्दगी, उनके अरमान, भारत माता और भारतीय समाज की तस्वीर अभी भी अधूरी है। जिस प्रकार वे चाहते थे, जो समाजवादी विचारधारा उनकी थी चाहे उससे कोई सहमत हो या नहीं हो, मगर वह अपनी धुन के पक्के रहे और आखिर तक अपने अनुयायियों और पार्टी वालों में कहते रहे। मेरा ख्याल है, आखिरी दिनों में उन्हें इस बात का दुःख भी रहा, जिस विचारधारा से देश को आगे बढ़ाना चाहते थे, उस विचारधारा में उन्हें कामयाबी नहीं मिली। आगे देखना है कि देश किस ओर जाता है, मगर हमें उनको श्रद्धांजलि अर्पित करनी है तो इस देश में प्रजातंत्र सोशलिजम को कायम रखना है। यही वह चाहते थे। ज्यादा नहीं कहते हुए मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से, इण्डियन नेशनल कांग्रेस की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री श्योपत सिंह मकासर (हनुमानगढ़) : माननीय अध्यक्ष महोदय, जंगे आजादी का सूरमा आज हमारे बीच में नहीं रहा है। कल जब मैंने अखबार पढ़ा, मोरारजी भाई की आखिरी मुलाकात उनसे हुई थी। मेरा ख्याल बना था उनके चेहरे से ऐसा लग रहा था कि वह ज्यादा दिन नहीं रहेंगे। मैंने जब आज

(श्री श्योपतसिंह मकासर)
सुबह खबरें सुनने के लिए रेडियो खोला तो सबसे पहले यह सुना कि जंगे आजादी का सूरमा नहीं रहा है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, बाबू जयप्रकाश नारायण ने जहां जंगे आजादी के दौरान अंग्रेजों की जेलों में यातनाएं भुगतीं, कैसी अजीब विडम्बना है कि उसी व्यक्ति को आजादी के बाद आखिर में अपने देश की जेलों में, हुकूमत की जेलों में रहना पड़ा। उसे विरासत में एक बीमारी मिली जो उसकी मौत का अन्जाम हुई।

माननीय अध्यक्ष, वह कैसे आदमी थे, मुझे याद है बचपन की बात, सन् 46 की मेरे इलाके पंजाब और हरियाणा में उस वक्त दो ऐसे नौजवान थे, अरूणा आसफ अली और जयप्रकाश नारायण, जो उत्तर भारत में उन दिनों सबसे ज्यादा चर्चा का विषय थे। मुझे बचपन की बात याद आती है, उनकी एक मीटिंग में मैंने स्पीच सुनी थी, अरूणा आसफ अली और जयप्रकाश नारायण की, वे कैसे व्यक्ति थे? वे ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने देश से कुछ नहीं लिया। वे ले सकते थे। जिन पदों के लिए आज देश में ईमान बेचा जा रहा है उन पदों को वे भी प्राप्त कर सकते थे। आजादी के बाद में मुझे याद है, पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने उनको न्यौता दिया था, राष्ट्रपति पद भी उनको सौंपने के लिए चर्चा हुई, मगर उन्होंने राजनीति से अलग रहकर, राजनीति से अलग होकर, समाज के अन्दर अहिंसक तरीके से, जो उनको फिलोसफी पसन्द आई आखिर में उसके अनुसार काम किया। आचार्य विनोबा जी के साथ में उन्होंने अपने जीवन का कार्य शुरू किया सत्ता से बिल्कुल अलग, सत्ता से दूर रहकर आखिर में सत्ता से दूर रहकर भी, डाकुओं तक पहुंच गए थे, ऐसे सामाजिक कार्यों में उन्होंने अपना ध्यान लगाना शुरू कर दिया था। अहिंसक आन्दोलन के अन्दर उन्हें देश के हालात को देखकर 1974 में वापस आना पड़ा वह कौन सी घटना थी, वह कौन सा दर्द था, जो उनके दिल में उठा? वह कौन सी भावना थी कौन सी बात थी जो उनको वापस राजनीति में लाई? गुजरात में विद्यार्थियों का आन्दोलन हो रहा था, विद्यार्थी लोग अपनी सहूलियतों को लेकर आन्दोलन कर रहे थे। उस आन्दोलन ने जयप्रकाश बाबू को झकझोर दिया। वे वापस राजनीति में नहीं आना चाहते थे, मगर उस समय अव्यवस्था के खिलाफ, महंगाई के खिलाफ, भ्रष्टाचार के खिलाफ, जिससे इस देश के करोड़ों लोग पीडित थे, देश में आवाज उठ रही थी, उन्होंने उस आवाज को और उनके दर्द को समझा। उसके बाद बहुत बड़ा देश के अन्दर एक तूफान आया। इमर्जेंसी के नाम पर उस तूफान को शान्त किया गया। इमर्जेंसी के बाद देश में जो विभिन्न पार्टियां अलग-अलग थीं, अलग अलग विचारधाराओं के लोग थे, यह उन्हीं का करिश्मा था कि उन्होंने उनको एक जगह इकट्ठा किया और जिसका कभी किसी को अन्दाजा नहीं था वह करिश्मा करके दिखाया। तीस साल तक कांग्रेस ने शासन किया, जिसके लिए कोई अन्दाज नहीं लगा सकता था कि वह जा सकती है, उसको गद्दी से उतार दिया। मगर अफसोस, उनकी तमन्ना अधूरी रही। आखिरी दिनों में उनका आखिरी पैगाम भी ठुकरा दिया गया। यह कसक थी, पीड़ा थी उनके मन में जो वे अनुभव करते गये हैं।

(श्री श्योपतसिंह मकासर)

अब हमारा देश के अन्दर यह फर्ज बनता है, हम लोगों का यह कर्तव्य है कि हम तमाम लोग, जिनको दिलचस्पी गरीबों की भलाई में है, जो चाहते हैं देश में समाजवाद आए, उनकी उस तमन्ना को पूरा करें। जो अधूरा मिशन है उनका उसको पूरा करना चाहिए, यही उनको सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उस महान आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

श्री नूरा (मसूदा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज सुबह जब मैं बाहर से जयपुर आया घर पर तो मुझे जानकारी मिली, रेडियो पर सुना कि बाबू जयप्रकाश नारायण का स्वर्गवास हो गया। महान लोगों के काम ही महान होते हैं, कई लोग अपने लिए काम करते हैं। लेकिन देश में ऐसे लोग भी पैदा हुए हैं जिन्होंने गरीब वर्ग के लिए और पिछड़े हुए वर्ग के लिए और देश को सुखी देखने के लिए हमारे देश में लोग तकलीफों से बाहर आवें, इसके लिए संघर्ष करते हुए सारा जीवन गुजार दिया। बाबू जय प्रकाशजी के जीवन के बारे में जैसा कि कांग्रेस (आई) के नेता और कांग्रेस के नेता ने कुछ गुण बताए, यह सच है कि अंग्रेजों के जमाने में देश को आजाद कराने में ऐसे लोगों का जहां बड़ा योगदान रहा, बहुत बड़ा योगदान रहा, बहुत बड़ा काम रहा वहां देश का आजाद कराने के बाद गरीब वर्ग को गरीबी से निकालने के लिए भी ऐसे लोगों ने संघर्ष किया। अपने लिये नहीं देश को सुखी देखने के लिए जो महान कार्य करते हैं और उस काम के अन्दर अपना योगदान करते हैं, वे लोग महान लोगों की गिनती में आते हैं। ऐसे महान लोगों को दुनियां के लोग शुरू से लेकर के आखिरी दिनों तक आखिरी दम तक याद करते हैं। देश के लिए संघर्ष करने वाले महान लोगों में से बाबू जयप्रकाशजी एक हैं और उन लोगों में से एक हैं जिन्होंने देश के लिए बहुत कुछ किया है।

मैं मेरी तरफ से और मेरी पार्टी की तरफ से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उनके परिवार को जो दुःख हुआ उनको सहन करने की शक्ति मिले, यही प्रार्थना करता हूं।

श्री नवनीत कुमार पालीवाल (नाथद्वारा) : अध्यक्ष महोदय, आज सुबह 8 बजे रेडियो पर सुना है कि लोकनायक हमारे बीच नहीं रहे। उनका पार्थिव शरीर सफेद चादर में लपेट कर पटना में रखा हुआ है और उस पर गुलाब की पंखुड़ियां बिछी हुई हैं। मैं भगवान से प्रार्थना करने लगा, जैसे मार्च में वापस समाचार आया कि जयप्रकाश नारायण जिन्दा हैं वैसे ही सफेद चादर से उठ बैठें और पंखुड़ियां बिखर जायें, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उत्तरायण के आने से पहले इन्होंने प्राण त्याग दिये। उन्होंने महाभारत का अन्त भी नहीं देखा।

आचार्य चाणक्य ने कहा है, अध्यक्ष महोदय, कि राजनीति एक भ्रष्ट वेश्या है और भ्रष्ट वेश्या जिसके संसर्ग में रहती है उसको भी भ्रष्ट करने की कोशिश करती है। इतिहास साक्षी है हजारों वर्षों में बहुत कम ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिनके साथ यह भ्रष्ट वेश्या एक सती साध्वी की तरह रही है।

(श्री नवनीत कुमार पालीवाल)

भगवान कृष्ण, भगवान बुद्ध, चाणक्य, महात्मा गांधी और उसके बाद जयप्रकाश नारायण, उसने बहुत बार लुभाने की चेष्टा की लेकिन वे महापुरुष इसके जाल में नहीं आए, सत्ता की तरफ बढ़े ही नहीं। वे हमेशा त्याग की तरफ चलते रहे निर्माण की तरफ चलते रहे और संघर्ष के पथ पर चलते रहे। आजादी के पहले चलते रहे आजादी के बाद में भी चलते रहे, अनवरत चलते रहे। बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जो सत्ता में रहते नहीं और अपने सपनों को साकार होते हुए देखते हैं। जयप्रकाश नारायण जी ने, अध्यक्ष महोदय, समग्र क्रान्ति का स्वप्न देखा, दूसरी आजादी का सपना देखा, लोकतन्त्र की पुनः स्थापना का स्वप्न देखा। कुछ अंश में वह सपना साकार होते हुए भी देखा लेकिन अपने सपनों को टूटते हुए भी देखा सारा देश दुःखी है, हमारे बीच उनका पार्थिव शरीर नहीं उठ सकता। जिस गुजरात के युवक ने, बिहार के युवक ने, सारे देश के युवकों ने उनके नेतृत्व में संघर्ष किया, वह आज भी जिन्दा है और जयप्रकाश नारायण जिन्दा नहीं रहे। मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और प्रणाम करता हूं उनकी आत्मा को।'

श्री अध्यक्ष : हमारे देश के प्रिय नेता लोक नायक श्री जय प्रकाशजी के आकस्मिक निधन पर हमारे देश को जो क्षति पहुंची है उसका, मैं समझता हूं, पूरा होना असंभव नहीं है तो आसानी से संभव भी नहीं हो पाएगा। सदन के माननीय नेता, विरोधी पक्ष के नेताओं और अन्य माननीय सदस्यों ने इस दुःखद अवसर पर जो विचार व्यक्त किए हैं, उनमें मैं अपने आप को सम्मिलित करता हूं। जयप्रकाश बाबू निस्संदेह, एक महापुरुष थे, उनका निधन राष्ट्र के लिए विपत्ति है। उनकी निःस्वार्थ सेवा, लोकतंत्र को बचाने की इच्छा और उनके सद्गुणों को अपनाने की भावना अपने दिल में रखी जाए तो मैं समझता हूं माननीय जय प्रकाशजी के लिए वह असली श्रद्धांजलि होगी। उनके बताए हुए रास्तों पर, पदचिन्हों पर अगर हम चलते हैं तो वही उनके प्रति आदर्श, सम्मान और श्रद्धांजलि कही जाएगी।

मैं इस अवसर पर कुछ और ज्यादा नहीं कहना चाहूंगा। उनके लिए जितना भी कहा जाए वह कम होगा।

सदन के सामने जो प्रस्ताव है, मैं माननीय सदस्यों से निवेदन करता हूं कि दो मिनट मौन खड़े होकर अपनी श्रद्धा प्रकट करके इसे पारित करें।

(सदन ने दो मिनट मौन खड़े रह कर स्व. श्री जयप्रकाश नारायण को श्रद्धांजलि अर्पित की।)

श्री कल्याण सिंह सांखला (अजमेर पूर्व) : अध्यक्ष महोदय, मैं इस बात की ओर सदन का ध्यान दिलाऊंगा कि आज सुबह 8 बजे जैसे ही आकाशवाणी पर यह समाचार प्रसारित हुआ जिसमें कहा गया कि "बड़े दुःख के साथ हमें कहना पड़ता है कि श्री जय प्रकाशजी नहीं रहे।" ज्यों ही 8.10 बजे पर समाचार बुलेटिन समाप्त हुआ उसके बाद विविध भारती विज्ञापन प्रसारण से भूले बिसरे गीतों और गानों का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। हम जो जय प्रकाशजी के प्रति श्रद्धा रखने वाले लोग हैं उन्हें आकाशवाणी के इस कार्य से आघात पहुंचा है। विविध भारती के इस कार्य को बहुत ही निन्दनीय मानते हैं,

(10)

श्री अध्यक्ष : सदन की कार्यवाही बुधवार दिनांक 10 अक्टूबर, 1979, के म. पू. 11–00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है। आज की कार्य सूची का कार्य दिनांक 10-10-79 को लिया जाएगा।

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही म. पू. 11.45 बजे बुधवार दिनांक 10 अक्टूबर, 1979 के म. पू. 11.00 बजे तक के लिये स्थगित हुई)